सरयू राय
सदस्य
झारखण्ड विधान सभा
सभापति
प्रत्यायुक्त विधान समिति

आवास :
● एफ. टाईप, आवास सं०-1, ए.जी. मोड़,
डोरण्डा, राँची - 834002
मोबाईल नं.: 9431114466
ई-मेल : saryuroyoffice@gmail.com
वेबसाईट : www.saryuroy.in

पत्रांक : 647/JSR/26 दिनांक : 22/08/2026

उपायुक्त,
पूर्वी सिंहभूम, जमशेदपुर.

महाशय,

आपको स्मरण होगा कि बीते 8 जुलाई 2026 के मेरे आग्रह पर आपने मानगो नगर निगम के अपर नगर आयुक्त, जेएनएसी के नगर आयुक्त और टाटा स्टील यूआईएसएल का महाप्रबंधक की बैठक अपने कार्यालय कक्ष में बुलाया था. बैठक में मैं भी शामिल था. बैठक के उद्देश्य के बारे में संक्षेप में मैंने निवेदन किया था कि जमशेदपुर की इन नगरपालिका इकाइयों को एक संस्थान (institution) के रूप में काम करना चाहिए और प्रत्येक वर्ष किए गए कार्यों का लेखाजोखा संधारित करना चाहिए ताकि नगरपालिका पदाधिकारियों के स्थानांतरण के बाद नए आनेवाले पदधारी को एक नजर में में कृत कार्यों की और शेष कार्यों की एक झलक मिल जाएँ.

बैठक में मैंने स्पष्ट किया कि मैं 2005 से इन नगरपालिका इकाइयों की कार्यप्रणाली देख रहा हूँ कि इनकी कार्यप्रणाली में संस्थागत लेखाजोखा की प्रवृत्ति और कृत कार्यों एवं शेष बचे कार्यों को पूरा करने के लिए प्राथमिकता निर्धारण का घोर अभाव है. बजट उपलब्धता के अनुरूप कार्य योजनाओं के निष्पादन एवं योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता शून्य के बराबर है. योजना क्रियान्वयन हेतु निविदा निष्पादन, संवेदक चयन, संवेदकों के साथ एग्रीमेंट करने , उन्हे कार्यादेश देने तथा समय सीमा के भीतर उनसे कार्य पूरा कराने के बारे में ये नगरपालिका निकाय बिल्कुल तत्पर नहीं है. इसका खामियाजा जनता भुगत रही है. जनता, कार्य क्षेत्र, विधायक, नगरपालिका पदाधिकारी, उप विकास आयुक्त, उपायुक्त स्तर तक संचिकाओं के मकड़जाल में विकास योजनाएं और जनसुविधा योजनाएं दम तोड़ देती हैं. आधिकारिक रूप में इनका पूरा होना घोषित होने तक कृत कार्यों के पुनः मरम्मत की आवश्यकता महसूस होने लगती है. सड़क, गली, नाली, जलापूर्ति, साफ–सफाई, जल–मल निकासी जैसी जनसुविधाएँ तथा सामुदायिक भवन आदि निर्माण के तिलिस्म में नगरपालिका इकाइयां एवं जन आकांक्षाएँ साल दर साल संलग्न रहती हैं, फिर भी असंतुष्ट रहती हैं. जिला योजना, नगर विकास योजना, सांसद–विधायक निधि योजना सबकी एक ही स्थिति है.

आपको स्मरण होगा कि मैंने कृत कार्यों एवं शेष कार्यों का लेखाजोखा संधारण, निरंतर चलने वाली जनसुविधाओं के निर्माण, मरम्मत एवं देखरेख से जुड़ी योजनाओं तथा नगरपालिका क्षेत्र के विस्तार एवं संस्थागत विकास की योजनाओं के सूत्रण, निधि व्यवस्था, स्वीकृति एवं क्रियान्वयन के लिए अलग अलग संस्थात्मक ढाँचा बनाना चाहिए, इनमें घालमेल नहीं होना चाहिए.

Scanned with OKEN Scanner

जमशेदपुर पूर्वी क्षेत्र का विधायक चुने जाने से अबतक मैं इस बात पर जोर देते आ रहा हूँ कि क्षेत्र विकास की नाला आधारित योजना पर नगरपालिकाओं को काम करना चाहिए. जाड़ा, गर्मी के सामान्य दिनों एवं बरसात के विशेष दिनों में घरों से निकलने वाले पानी को बड़े नालों तक शीघ्रता एवं तत्परता से बड़े नालों में गिरा दिया जाए और जल जमाव नहीं हो इसके लिए दो बड़े नालों के बीच के क्षेत्रों जनसुविधा योजनाओं एवं क्षेत्र विकास योजनाओं का सूत्रण एवं क्रियान्वयन होना चाहिए.

यह तभी संभव होगा जब नगरपालिका निकाय एक सक्षम संस्था के रूप में काम करेंगे और इसके लिए दक्ष एवं प्रवीण मानव बल की सहायता लेंगे. बैठक में सभी इसपर सहमत हुए पर डेढ़ माह का समय बीत जाने के बाद भी इस दिशा में पहल शून्य है. लकीर का फकीर की तरह पूरानी आदतों के घेरे में चक्करघिन्नी में घिरे रहने की कार्यप्रणाली की आदतों को बदलने की मानसिकता इनमें न तो सोच के स्तर पर दिख रही है और क्रियाशीलता के स्तर पर.

अनुरोध है कि इस दिशा में ठोस सुधारात्मक पहल करने के लिए स्थानीय नगरपालिका निकायों का प्रबोधन करना चाहेंगे.

सधन्यवाद,

सरयू राय

Scanned with OKEN Scanner